अमेरिका ने किया सौंद का सम्मान

लुइस फ़ेनर

कांग्रेस में पहुंचे पहले भारतीय अमेरिकी के चित्र का अनावरण

फोटो: हाउस ऑफ रिप्रेज़ेंटेटिव्स फ़ोटो ऑपर्स

(बाएं) वाशिंगटन डी.सी. में अमेरिकी प्रतिनिधि सभा की कैनन बिल्डिंग में 7 नवंबर, 2007 को पहले भारतीय अमेरिकी कांग्रेस सदस्य दलीप सिंह सौंद के पोर्ट्रेट का अनावरण किया गया।

वाशिंगटन डी. सी. में एक समारोह के दौरान 225 लोगों की करतल ध्वनि के बीच दलीप सिंह सौंद की 6 वर्षीय पड़पोती ने अमेरिका के संसद भवन, कैपिटल में नीला आवरण खींचकर उनके पोर्ट्रेट का अनावरण किया। दलीप सिंह सौंद पहले भारतीय अमेरिकी थे जो अमेरिकी कांग्रेस के लिए निर्वाचित हुए। जैसे ही आवरण हटा, लोगों ने प्रतिनिधि सभा के कैनन भवन में संगमरमर के एक स्तंभ के पास खड़े एक आकर्षक और ओजस्वी व्यक्ति की छवि दिखाई दी।

पोर्ट्रेट का अनावरण 7 नवंबर को किया गया जो प्रतिनिधि सभा के ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण सदस्यों को समर्पित एक चित्र शृंखला का हिस्सा है। सौंद का निधन 1973 में हुआ था। वह 1956 में निर्वाचित हुए थे और उन्होंने तीन कार्यकाल पूरे किए। उन्हें न केवल अमेरिकी कांग्रेस में पहुंचने वाले प्रथम भारतीय अमेरिकी के रूप में जाना जाता है बल्कि एक ऐसे व्यक्ति के रूप में भी उनकी पहचान बनी जिसने भारतीय लोगों के लिए अमेरिका में प्रवास का मार्ग प्रशस्त किया।

उनके पोते ब्रूस फ़िशर भी समारोह में भाग लेने के लिए आए हुए दर्ज़न भर पारिवारिक सदस्यों में से एक थे। उन्होंने कहा, ''अगर मेरे दादा आज भी जीवित होते तो वह कहते, ''अमेरिका में दूसरी श्रेणी की नागरिकता का कोई स्थान नहीं है।'' फ़िशर उस उक्ति को ही दुहरा रहे थे जो सौंद द्वारा अक्सर कही जाती थी और पोर्ट्रेट पर अंकित थी। ''किसी भी काम को सबसे पहले करना एक चुनौती है। हम यहां दलीप सिंह सौंद का सम्मान करने के लिए एकत्र हुए हैं, लेकिन हमें पता है वे हमसे सभी एशियाई अमेरिकी लोगों का सम्मान करने को कहते।''

सौंद का जन्म 1899 में भारत में अमृतसर में हुआ था। वह 1920 में यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया, बर्कले में पढ़ने के लिए अमेरिका आए। गणित में मास्टर डिग्री और डॉक्टरेट हासिल करने के बावजूद उन्हें अध्यापन का काम नहीं मिल पाया। तब वह किसान बन गए। हालांकि न उनकी अपनी कोई जमीन थी, न खेती के लिए लीज पर जमीन ले सकते थे और न उस समय के नियमों के अनुसार अमेरिकी नागरिक बन सकते थे। सौंद ने एक दोस्त और अपनी पत्नी के नाम लीज पर जमीन ली क्योंकि वह अमेरिका की नागरिक थीं। उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा, '''एलियन लैंड एक्ट' के उल्लंघन के डर से जमीन के मालिक एशियाई व्यक्ति की पत्नी को भी लीज पर जमीन देने का खतरा मोल नहीं लेना चाहते थे।'' कैलिफ़ोर्निया के तत्कालीन कानून में किसी भी ऐसे व्यक्ति को लीज पर जमीन देने या उसका मालिकाना हक देने का निषेध था जो अमेरिका की नागरिकता का पात्र न हो। और, कोई भी एशियाई व्यक्ति इसका पात्र नहीं था।

सौंद 'इंडिया एसोसिएशन ऑफ अमेरिका' के प्रथम अध्यक्ष थे। इस ग्रुप के प्रयासों के कारण भारतीय तथा फिलिपीनी मूल के लोगों के लिए जमीन के मालिकाना हक का कानून बना जिस पर 1946 में राष्ट्रपति ट्रूमेन ने हस्ताक्षर किए। सौंद को 1950 में न्यायाधीश के पद के लिए चुना गया, लेकिन पूरे एक वर्ष की नागरिकता न होने के कारण उन्हें यह पद न मिल सका। उन्हें 1949 में नागरिकता मिली थी। उन्होंने हार नहीं मानी और 1952 में फिर चुनाव लड़ा और निर्वाचित हो गए।

मेहनती और जन सेवा के लिए समर्पित सौंद ने डेमोक्रेट के रूप में संसदीय चुनाव 1956 में जीता। यह चुनाव उन्होंने कैलिफ़ोर्निया जिले से जीता जहां रिपब्लिकन तथा जन्मजात अमेरिकी श्वेत उम्मीदवारों को ही मत देने की परंपरा थी। उन्होंने और उनके परिवार ने घर-घर जाकर मतदान करने वाले लोगों से उम्मीदवार का परिचय कराया और उनका विश्वास प्राप्त किया।

मैक्डर्मोट कहते हैं, ''मुश्किल घड़ी में उन्होंने अमेरिका और एक व्यक्ति की ताकत से परिवर्तन लाने में विश्वास जताया। एरिक सौंद ने कहा कि उनके दादा दलीप सौंद का ''हर चीज़ के प्रति सकारात्मक सोच था। उन्होंने बाधाओं का सामना किया और उन्हें याद रखा लेकिन उन्हीं का रोना नहीं रोया। इस अर्थ में वह सर्वोत्कृष्ट अमेरिकी थे।'' दलीप सौंद के तीन बच्चों में सबसे छोटी इली सौंद याद करती हैं कि जब वह बड़ी हो रही थीं तो उनके पिता ने उनको कभी भी अपनी कठिनाइयों के बारे में नहीं बताया। ''वह बस यही कहते थे, 'कठिन मेहनत करो और तुम्हें उसका फल मिल जाएगा।''

फोटो: जेनिन मार्क्स/अमेरिकी विदेश विभाग

दलीप सिंह सौंद के पोर्ट्रेट के अनावरण के मौके पर उनके पोते एरिक सौंद (मंच पर) और परिवार के अन्य सदस्य मौजूद थे। एरिक सौंद इस मौके पर मौजूद कुछ कांग्रेस सदस्यों से बातचीत कर रहे हैं।

चित्रकार जॉन फ्रीडमैन कहते हैं कि पोर्ट्रेट बनाने का काम मिलने से पहले तक उन्होंने दलीप सौंद का नाम नहीं सुना था, ''इसलिए मैं उनके असाधारण जीवन के बारे में कुछ भी नहीं जानता था। उनके बारे में अधिक जानने और याद रखने की ज़रूरत है।''

अनेक वक्ताओं को सौंद के जीवन और इस वर्ष निर्वाचित लुइज़ियाना के प्रथम भारतीय मूल के अमेरिकी गवर्नर बॉबी जिंदल के चुनाव में गहरा संबंध दिखाई देता है। जिंदल का जन्म अमेरिका में हुआ लेकिन उनके माता-पिता भारत से अमेरिका में आकर बस गए थे।

सौंद को अगुआ मानने वाले समारोह में आए लोगों में सत्या हनागुड भी थे जो इस समारोह में भाग लेने के लिए अटलांटा से आए थे। उन्होंने कहा, ''बॉबी जिंदल के गवर्नर बनने की राह सौंद ने ही तैयार की। भारत में जन्मे हनागुड जॉर्जिया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में एरोस्पेस इंजीनियरी पढ़ाते हैं। वह कहते हैं, ''मैं केवल इस समारोह में भाग लेने आया हूं। उनके उस संघर्ष को याद करने जो उन्होंने हमारे लिए किया।'' वह कहते हैं, ''यह पोट्रेट बहुत महत्वपूर्ण है।''

लुइस फ़ेनर यूएसइनफ़ो की कार्यालय लेखिका हैं।

फोटो: बी. एस. बिनोय

नई दिल्ली में इंडो-अमेरिकन फ्रेंड्स ग्रुप और अमेरिकन सेंटर द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में दलीप सिंह सौंद को मरणोपरांत सम्मानित किया गया। यह सम्मान अमेरिकी दूतावास के डिप्टी चीफ़ ऑफ़ मिशन स्टीवन व्हाइट (बीच में) के हाथों उनके भाई के पोते अवतार सिंह (दाएं) ने लिया। साथ में खड़े हैं इंडो अमेरिकन फ्रेंड्स ग्रुप के चेयरमैन अजय पी. मिश्र।

ज़्यादा जानकारी के लिए

दलीप सिह सौंद

http://www.saund.org/dalipsaund

अमेरिकी प्रतिनिधि सभा

http://www.house.gov